आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2019
वर्ष 5, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2019, पृ. 46–48.

पुस्तक समीक्षा

शोशाना जुबोफ़ 2019: *द एज ऑफ़ सर्विलांस कैपिटालिस्मः दी फाइट फॉर दी फ़्यूचरएट दी न्यू फ्रंटियर ऑफ पावर (The Age of Surveillance Capitalism: The Fight for the Human Future at the New Frontier of Power)*, पब्लिक अफेयर्स डॉट कॉमः कुल पृष्ठः 540।

यह पुस्तक शोशाना जुबोफ़ द्वारा लिखी गयी है। यह एक आलोचनात्मक व विवेचनात्मक विवरण प्रस्तुत करती है। आज के युग में बड़ी तकनीकी कंपनियाँ जो सदा लोगो पर निगरानी किये हुए हैं। वे आपको देख रहे हैं लेकिन आपको नहीं पता की वो 'बिग बॉस' कौन है? और वह आपकी सभी प्रकार की गतिविधियों जो आप सूचना के रूप में रखते हैं, नज़र बनाये रखते हैं।

शोशाना जुबोफ़ की पुस्तक में दिए विचारो को समझने के लिए निगरानी पूंजीवाद को 'मुक्त बाज़ार' को अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग देखना होगा और लोकतान्त्रिक ढांचे को बनाये रखने के लिए इसकी आवश्यकता को भी समझना होगा। यह निगरानी केवल पूंजी व लाभ तक सीमित नहीं है अपितु राजनीतिक ढांचे में बड़े हेर–फेर और सामाजिक तानेबाने में बड़े बदलाव लाने की क्षमता रखता है। यह आमतौर पर देखा जा रहा है किस तरह नए युग में तकनीकी केवल उत्पादन की क्षमता बढाने के लिए ही नहीं बल्कि एक बड़े पैमाने पर सामाजिक कार्यशैली का आधार बन रहा है। संप्रेक्षण का साधन मात्र न होकर एक नई सामाजिक दुनिया जिसे हम वर्चुअल जगत भी कहते हैं, उसकी आधारशिला इन्टरनेट और तकनीकी पर निर्भर कर रही है।

जुबोफ के अनुसार, 'निगरानी पूंजीवाद या सर्विलांस कैपिटालिस्म' एक अभूतपूर्व घटना है जो एक नए प्रकार की अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। इसका आधार आर्थिक होते हुए भी इसका सामाजिक प्रभाव अत्यधिक है जो व्यक्ति को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से एक लाभ कमाने हेतु प्रयोग करता है। जुबोफ तकनीकी को औद्योगिक क्रांति के बाद एक सूचना क्रांति के स्थान पर, उस निरंतरता को तोड़ते हुए, इस निगरानी पूंजीवाद को एक दुष्ट–उत्परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वह इसको औद्योगिक क्रांति के काल में तकनीकी के इस्तेमाल की भांति नहीं देखना चाहती अपितु उस समय की अर्थव्यवस्था में लाभ कमाने के पूंजीवादी मॉडल को आधार मानकर कहती हैं कि इस पूंजीवाद में कच्चा माल मनुष्य स्वयं हैं उसके विचार जो लिखित रूप से अधिक से अधिक पूंजीवादी लोग प्रयोग कर रहे हैं एक नई दुष्ट व्यवस्था बनाने के लिए जहाँ आपके विचारो को भी बदलने की शक्ति पूंजीवादियों के पास होगी। जुबोफ की इस संकल्पना में डेटा को वे कच्चा स्त्रोत या माल बताती है और लोगो के बारे में भविष्यवाणी करना इसका उत्पाद जिससे

तकनीकी कम्पनियाँ भरपूर लाभ कमाने में लगी हैं। वे नई तकनीकी जैसे डिजिटल माध्यम, आर्टिफिशल इंटेलिजेंस इत्यादि का प्रयोग करके इस प्रकार के पूंजीवाद का निर्माण कर चुकी हैं।

यहाँ सामाजिक मुद्दा यह है की विज्ञानं और तकनीकी का विकास मानव के विकास से जुदा हुआ है और इस प्रकार की तकनीकी पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था मनुष्य और समाज के लिए घातक साबित हो रही है क्यूंकि वे केवल मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन नहीं कर रहे अपितु उसको तकनीकी के माध्यम से प्रभावित भी कर रहे हैं। शोषण फेसबुक पर प्रयोगकर्ताओं के बारे में बताते हुए यह सत्यापित करती हैं कि व्यवहार मनोविज्ञान से और तकनीको का प्रयोग करके लोगों को वोट देने या नहीं करने में इस तरह के पूंजीवाद का हाथ है। समाजशास्त्र के अध्धयन में यह दर्शाया गया है किस प्रकार समाज मनुष्य के जीवन में उसके विचारों और संकल्पनाओं को एक मूर्त रूप देता है। जिसे दुर्खीम सामाजिक तथ्य भी कहते हैं। जो समाज के अतुल्य शक्ति को भी दर्शाता है। इस प्रकार की डेटा संचालिक व्यवस्था में समाजिक तथ्यों को भी प्रभावित किया जाता है और इसमें सामाजिक दयनीयता को प्रदर्शित करते हैं। केवल ताकतवर लोगो के हित के लिए, राजनितिक लाभ, आर्थिक लाभ, सांस्कृतिक लाभों के लिए इस तरह की दुष्ट व्यवस्था को प्रयोग करते हैं

इस पुस्तक में जुबोफ़ तकनीकी कंपनियों जैसे एप्पल, गूगल और फेसबुक की चर्चा करते हुए एक तार्किक अध्ययन करती हैं। Apple को वे एक ऐसी फर्म के रूप में देखती हैं, जो अपने ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता और स्वायत्तता की प्रति सतर्क है और उनके डाटा की रक्षा करता है। वे पूंजीवाद के सौम्य रूप पर विश्वास करते हुए एक बहु–चर्चित तकनीकी कंपनी बन गए हैं वही दूसरी ओर Google और Facebook बिल्कुल उलट एक ऐसे पूँजीवाद को बाधा रहे हैं जो निष्कर्षण के विचार का प्रयोग कर डाटा के प्रयोग से व्यक्तिगत व्यवहार को समझ और उसमे बदलाव की संभावनाएं पैदा कर चुका है। उनकी प्रयोगशालाओं में अब इन विचारों को लाभ कमाने के एक नए मॉडल के रूप में ये बड़ी कम्पनियां अपने राजनीतिक व आर्थिक हित के लिए प्रयोग कर रही हैं। या अब एक व्यावसायिक रणनीति का हिसा बन गया है और डाटा (लाभ) के लालच में वे एक दुष्ट पूँजीवाद के मॉडल को जन्म दे चुके हैं जो औद्योगिक पूंजीवाद को दोहरा रहा है और वह इस बार लाभ के लिए कच्चे माल के लिए प्राकृतिक साधन को नहीं अपितु मानव के व्यवहार को क्षरण कर रहा है। यह मानव को तकनीकी के द्वारा उपनिवेशवाद के सिद्धांत के तहत, शोषण कर रहा है। जुबोफ इसके प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहती हैं की एक 'भविष्य कहने वाले' सिद्धांत का उदय हुआ है। जो मनुष्य के व्यवहारों के डाटा पर भविष्य बताने वाला मॉडल है। इसमें यक्तिगत जानकारी निकलने की होड़ सी लग गयी और Google, Facebook जैसी बड़ी कंपनियां इसी मॉडल के तहत मानव का गोपनीयता के अधिकार का हनन कर रही हैं। इसका दुरूपयोग ही सबसे बड़ा मुद्दा है जो शक्तिशाली लोग अपने–अपने राजनीतिक व आर्थिक फायदे हेतु कर सकते हैं। इस सबके बीच पैनोप्टीकोंन आधारित ढांचा जो नियंक्त्रण करने के लिए इतिहास में प्रयोग हुआ। हाल के दशकों में जिस प्रकार निगरानी पूंजीवाद उभर कर सामने आया है केवल पश्चिम ही नहीं पूरे विश्व में, राजनीतिक और पूंजीवाद की समझ समाज में बढ़ने लगी है। निगरानी पूंजीवाद को ऐतिहासिक व सामाजिक घटनाओं के तार्किक परिणाम के रूप में समझते हुए युद्ध व सैन्यीकरण के परिदृश्य को जोड़ने की कोशिश की गयी है।

यह एक अकादमिक पुस्तक है। इसमें गहन रूप से तार्किक अध्ययन किया गया है, जो मानव स्वतंत्रता के लिए चिंतित हैं। कुछ तर्कों के साथ समस्या है कि जुबोफ़ के दावे पूर्ण रूप से शक्तिशाली नहीं हैं। जैसे चेहरे की पहचान इत्यादि से मानव भावनाओं का पता लगाकर पूंजीपति उसका दुरूपयोग कर सकते हैं लेकिन यहाँ एक सवाल यह भी उठता है कि तकनीकी शक्ति का अनुमान क्या असल में मानव की भावनाओं का पता लगा सकता है या केवल यह एक अनुमान होगा?

यह संदेहात्मक होगा की अधिक से अधिक जानकारी के बाद भी निगरानी पूंजीवाद में मानव के विचारों व भावनाओं से हेरफेर करने का मौका कम ही होगा। परन्तु यह अपने आप में सजग करने और इस तरह की सामाजिक त्रुटियाँ होने की सम्भावना को बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत कर पाती है। सभी विषय से जुड़े विद्यार्थी, शोधार्थी, अध्यापक और सामाजिक अध्ययन में रूचि रखने वालों के लिए यह एक उत्कृष्ट समीक्षापूर्ण पुस्तक है।

मधु बाला
पी०एच०डी० स्कॉलर
सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ़ सोशल सिस्टम
जवाहरलाल नेहरु यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
।